वैदिक कालीन शिक्षा

प्रस्तावना –

वैदिक युग में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में अच्छे संस्कारों का विकास करना था। शिक्षा के द्वारा ही उनमें आदर्शों जैसे – ब्रह्मचर्य, सदाचार, परमार्थ, जनहित, भावना, सामाजिकता, परोपकार, बड़ों का आदर आदि का विकास किया जाता था।

इस पद्धति में ज्ञान व अनुभव में समन्वय करके शिक्षा दी जाती थी, जिससे शिक्षार्थी आसानी से आत्मसात कर लेते थे।

Dr. Mukesh Pancholi

इस उद्देश्य के संदर्भ में डॉ. आर. के. मुखर्जी ने लिखा है कि "शिक्षा का उद्देश्य पढ़ना नहीं था, वरन् ज्ञान व अनुभव को आत्मसात करना था।"

वैदिक युग में शिक्षा का दूसरा मुख्य उद्देश्य मानव का आत्मिक विकास करना था।

वैदिक काल में भारतीय शिक्षा व्यवस्था –

डॉ. एस. के अल्तेकर के अनुसार, "प्राचीन भारत में संभवत: 400 ई. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी, परिवार ही प्रमुख शिक्षा का केन्द्र था, उसके बाद कुछ ब्राह्मणों ने व्यक्तिगत रूप से शिक्षा देना आरंभ किया।"

Dr. Mukesh Pancholi

(I) प्राथमिक शिक्षा (Primary Education) -

प्राथमिक शिक्षा का आरंभ 5 वर्ष की आयु में "विद्यारंभ संस्कार" से प्रारंभ होता था और सभी जातियों के लिए अनिवार्य था।

पाठ्यक्रम –

पहले कुछ वादक यंत्रों का उच्चारण करना व बोलना सिखाया जाता था, जब वे उन यंत्रों को कंठस्थ कर लेते थे तब पढ़ने व लिखने की शिक्षा दी जाती थी।

भाषा के ज्ञान के बाद साहित्य व व्याकरण से परिचित करवाया जाता था।

Dr. Mukesh Pancholi

(II) उच्च शिक्षा –

प्राचीन काल में केवल प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था थी, परंतु समय के साथ इसमें प्रगति होती गई, उच्च शिक्षा के लिए विशिष्ट विद्यालयों/संस्थानों की स्थापना की गई।

प्रवेश व अवधि –

उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मण, क्षत्रियों, वैश्यों को था, इन जातियों के बालक क्रमश: 8, 11, 12 वर्ष की आयु में प्रवेश करते थे।

साहित्य व धर्मशास्त्र के अध्ययन की अवधि 10 वर्ष व एक वेद के अध्ययन की 12 वर्ष की थी।

Dr. Mukesh Panchal

पाठ्यक्रम –

इसमें परा (आध्यात्मिक) विद्या व अपरा (लौकिक) विद्या – दोनों को स्थान दिया गया। परा में (वेद, वेदांग, पुरान, दर्शन, उपनिषद् आदि थे।) अपरा में (इतिहास, तर्कशास्त्र, भौतिकशास्त्र आदि।)

शिक्षण विधि –

मौखिक थी। परीक्षा के लिए विभिन्न विद्वानों की सभाओं में छात्रों को उपस्थित होना होता था, जहां उनके प्रश्नों के उत्तर द्वारा उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण घोषित किया जाता था।

Dr. Mukesh Pancholi

शिक्षा संस्थाएँ –

- **टोल –** इसमें संस्कृत शिक्षा दी जाती थी, एक टोल में एक शिक्षक होता था।
- **चरण –** चरण में वेद के अंग की शिक्षा दी जाती थी, इसमें भी 1 शिक्षक होता था।
- **परिषद् –** परिषद् में विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी, एक परिषद् में 10 शिक्षक।
- **विद्यापीठ –** इसमें व्याकरण व तर्कशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी, इसमें अनेक शिक्षक होते थे।
- **मंदिर-महाविद्यालय –** किसी मंदिर से संबंधित महाविद्यालय में धर्म, दर्शन, वेदों व व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी।

Dr. Mukesh Pancholi

- **घाटिका** – धर्म व दर्शन की उच्च शिक्षा दी जाती थी।
- **गुरुकुल** – वेदों व साहित्य, धर्मशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। एक गुरुकुल में एक शिक्षक होता था।
- **विशिष्ट विद्यालय** – इसमें विशिष्ट विषय की शिक्षा दी जाती थी। इसमें एक शिक्षक होता था।
- **ब्राह्मणीय महाविद्यालय** – इस महाविद्यालय को चतुष्पथी कहा जाता था, क्योंकि इसमें दर्शन, पुराण, कानून व व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी। इसमें भी एक महाविद्यालय में 1 शिक्षक।
- **विश्वविद्यालय** – उच्च शिक्षा की कुछ संस्थाओं ने विश्वविद्यालय का रूप कालातंर में ग्रहण किया, इनमें धार्मिक शिक्षा के अलावा, वाणिज्य, चित्रकला, चिकित्सा आदि की शिक्षा विभिन्न शिक्षकों द्वारा दी जाती थी, काशी, नालंदा, तक्षशिला आदि सबसे अधिक प्रसिद्ध थे।

Dr. Mukesh Pancholi

शिक्षा के अन्य क्षेत्र –

(1) स्त्री शिक्षा – पुरुषों के समान शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार था। वेदों का अध्ययन करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी, यज्ञ में पुरुषों के साथ भाग लेती थी। अनेक विदुषी स्त्रियां – मैत्रेयी, विश्वरा, गार्गी, घोषा, शकुंतला, अनुसुईयां आदि प्रसिद्ध है।

बालिकाओं के लिए अलग व्यवस्था नहीं थी, कुछ सीमा तक सह शिक्षा व अधिकतर अपने परिवारों में दी जाती थी। बालिका शिक्षा को 200 ई. पू. तक सभी सुविधाएं प्राप्त थी, बाद में प्रतिबंध लगा दिया।

व्यावसायिक शिक्षा का भी प्रावधान था।

Dr. Mukesh Pancholi

चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा –

इसके शिक्षकों में अश्विनी कुमारों के नाम प्रसिद्ध है। चिकित्सा शिक्षा की अवधि साधारणतया 8 वर्ष मानी जाती है।

सैनिक शिक्षा –

सैनिक शिक्षा के लिए द्रोणाचार्य का नाम आज भी प्रसिद्ध है, यह शिक्षा विशेष रूप से क्षत्रिय व राजकुमारों के लिए थी।

वाणिज्य शिक्षा –

यह शिक्षा वैश्यों के लिए थी, मनुस्मृति व कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इसका पूर्ण वर्णन मिलता है।

Dr. Mukesh Pancholi

विभिन्न संस्कार –

1. उपनयन संस्कार -

यह वैदिक काल का महत्त्वपूर्ण संस्कार था, यही से बालक की औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ होता था। उपनयन का अर्थ पास ले जाना है। अत: बालक को शिक्षा के लिए गुरु के पास ले जाना, ही उपनयन संस्कार कहलाता है, यहां गुरु बालक के गुणों को परखते है, और अपना निर्णय देते थे। यह बालक का दूसरा जन्म माना जाता था। इसलिए बालक को द्विज कहा जाता था।

Dr. Mukesh Pancholi

2. विद्यारंभ संस्कार –

उपनयन संस्कार हो जाने पर, गुरुकुल में प्रवेश प्राप्त करना व जिस दिन बालक की शिक्षा का आरंभ होता था, उस दिन उसका विद्यारंभ संस्कार किया जाता था।

3. समावर्तन संस्कार –

शिक्षा पूर्ण होने पर यह किया जाता था और वे वापिस अपने घर लौट जाते थे। यह संस्कार गुरुओं द्वारा संपन्न करवाया जाता था।

Dr. Mukesh Panchori

बौद्ध युग में शिक्षा

परिचय –

बौद्ध धर्म का विकास मठों में हुआ था। मठ केवल धर्म से नहीं शिक्षा भी प्रदान करते थे शिक्षा देने का कार्य उनमें रहने वाले भिक्षुक करते थे।

प्राचीन काल के समान ही बौद्ध काल में भी केवल प्राथमिक व उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी, शिक्षा के यही दो स्तर थे –

I. प्राथमिक शिक्षा –

जातक कथाओं से ज्ञात होता है कि प्राथमिक शिक्षा केवल बौद्ध धर्मावलंबियों को ही नहीं, सभी जातियों के बालकों को उपलब्ध थी।

Dr. Mukesh Pancholi

यह शिक्षा मठों में दी जाती थी, प्रारंभ में धार्मिक शिक्षा व बाद में लौकिक आरंभ कर दी थी, फिर धीरे-धीरे शिक्षण संस्थाएं स्थापित होती गई।

प्रवेश तथा अवधि –

सातवीं शताब्दी में आने वाले चीनी यात्री के अनुसार प्राथमिक शिक्षा आरंभ करने की आयु 6 वर्ष की थी, इस शिक्षा की अवधि साधारणत: 6 वर्ष की थी।

पाठ्यक्रम –

फाह्यान ने प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का वर्णन इस प्रकार किया है – बालकों को प्रथम 6 माह में 'सिद्धिरस्तु' अक्षर थे, जिनको विभिन्न क्रम में रखकर 300 से अधिक श्लोकों की रचना की गई थी, 16 माह बाद बालकों को शब्द विद्या, चिकित्सा, अध्यात्मक, शिल्प स्थान संबंधित विद्या की शिक्षा दी जाती थी।

Dr. Mukesh Pancholi

इस प्रकार पाठ्यक्रम में धार्मिक व लौकिक दोनों विषय शामिल थे।

शिक्षण विधि –

शिक्षक लकड़ी की तख्ती पर वर्णमाला के अक्षर लिखता व उच्चारण करता था, विद्यार्थी उसका अनुकरण करते थे। इस प्रकार शिक्षण विधि पूर्णतया मौखिक थी।

शिक्षा का माध्यम –

शिक्षा का माध्यम, जन-साधारण की भाषा 'पाली' थी।

उच्च शिक्षा –

उच्च शिक्षा के द्वार सभी धर्मों व जातियों के लिए खुले थे। शिक्षा के प्रमुख केन्द्र मठ थे। पर सब मठों के शिक्षा विषय समान नहीं थे।

Dr. Mukesh Pancholi

प्रवेश व अवधि –

प्राथमिक शिक्षा समाप्ति के बाद उच्च शिक्षा का आरंभ होता था। बालक इसका आरंभ साधारणतया 12 वर्ष की आयु में करते थे। अध्ययन की अवधि 12 वर्ष, ताकि प्राचीन परंपरा अनुसार 25 वर्ष में किसी व्यवसाय को ग्रहण कर गृहस्थ आश्रम प्रारंभ कर सकें।

पाठ्यक्रम –

दो भागों में बंटा था – धार्मिक व लौकिक। धार्मिक – भिक्षु व भिक्षुणियों के लिए था, जबकि लौकिक – साधारण नागरिकों के लिए। ताकि वे सुयोग्य नागरिक बने, इसमें इन्हें धर्म, दर्शन, तर्कशास्त्र, न्यायशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र आदि विषयों का अध्ययन करवाया जाता था।

Dr. Mukesh Pancholi

शिक्षा का माध्यम –

शिक्षा का माध्यम सामान्य रूप से 'पाली भाषा' थी पर वैदिक साहित्य की शिक्षा संस्कृत भाषा में दी जाती थी। देश की अन्य प्रचलित भाषाओं का भी प्रयोग किया जाता था।

शिक्षा के अन्य क्षेत्र –

1. स्त्री शिक्षा -

वैदिक काल के अंतिम चरण में स्त्री शिक्षा की अवनति प्रारंभ हो गई थी, महात्मा बुद्ध के कारण इसे नवजीवन प्राप्त हुआ। जिसके कारण स्त्री शिक्षा का पर्याप्त विकास हुआ। बौद्ध धर्म की प्रसिद्ध प्रचारिकाएं – सुभा, अनुपमां, समेधा, कवयित्री के रूप में कालिदास के बाद विजयकां और संघमित्रा।

Dr. Mukesh Pancholi

2. व्यावसायिक शिक्षा –

1. लाभप्रद व्यवसायों जैसे कि कृषि, विपणन, लेखन कला, पशुपालन व हिसाब किताब की शिक्षा दी जाती थी।
2. प्राविधिक व तकनीकी शिक्षा – कुल 19 शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी, जिनमें 10 तक्षशिला-आखेट, चिकित्सा, धुनर्विद्या, इंद्रजाल (Magic Chain), हस्तिज्ञान (Elephant Love), भविष्यवाणी, मृत व्यक्तियों को जीवित करने के मंत्र, पशु बोलियों को समझने, ज्ञान व इंद्रियों पर नियंत्रण की शिक्षा दी जाती थी।

Dr. Mukesh Pancholi

3. सूत कातने, कपड़ा बुनने जैसे हस्तशिल्प की शिक्षा दी जाती थी।
4. जीवक, चरक, धन्वंतरि आदि महान आयुर्वेदाचार्य बौद्ध युग की देन है। अत: चिकित्साशास्त्र की भी शिक्षा दी जाती थी।
5. भवन निर्माण कला, मूर्तिकला व चित्रकला की भी शिक्षा दी जाती थी।

Dr. Mukesh Pancholi

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य –

1. प्रवज्जा संस्कार –

प्रवज्जा का अर्थ 'बाहर जाना' अर्थात् बालक अपने परिवार व पूर्व स्थिति का त्याग करके संघ में प्रवेश करता था, यह ससक्ज्ञश्र 8 वर्ष से पहले संपन्न नहीं हो सकता था, इसमें विद्यार्थी केश मुंडाकर पीले वस्त्र धारण करता था व शपथ लेता था।

2. उपसंपदा संस्कार –

इस संस्कार में 12 की आयु से 22 वर्ष तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद छात्र को मठ छोड़ना अनिवार्य होता था, भिक्षुगण छात्र से प्रश्न पूछते थे, यदि छात्र परीक्षा में सफल हो जाता था, तो उसका उपसंदा संस्कार कर दिया जाता था।

Dr. Mukesh Pancholi

1. वैदिक कालीन शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्कार था -

(A) विद्यारम्भ संस्कार

(B) उपनयन संस्कार

(C) प्रवज्या संस्कार

(D) समावर्तन संस्कार

Dr. Mukesh Pancholi

2. उपनयन संस्कार किया जाता था -

(A) सभी जाति के बालकों का

(B) केवल ब्राह्मण बालकों का

(C) वैश्य जाति के बालकों का

(D) क्षत्रिय जाति के बालकों का

Dr. Mukesh Pancholi

3. प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को किस नाम से जाना जाता था -

(A) वैदिक शिक्षा प्रणाली

(B) गुरुकुल प्रणाली

(C) भारतीय शिक्षा प्रणाली

(D) धार्मिक शिक्षा

Dr. Mukesh Pancholi

4. गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली में किस शिक्षण-विधि को अपनाया जाता था -

(A) विद्यारम्भ संस्कार

(B) मौखिक विधि

(C) लिखित तथा मौखिक विधि

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Dr. Mukesh Pancholi

5. प्राचीन भारतीय शिक्षा-प्रणाली में स्त्री-शिक्षा की क्या स्थिति थी -

(A) पूर्ण अवहेलना की गयी थी

(B) स्त्री-शिक्षा को समुचित महत्त्व दिया जाता था

(C) केवल साक्षरता प्रदान की जाती थी

(D) केवल गृहस्थ सम्बन्धी शिक्षा दी जाती थी

Dr. Mukesh Pancholi

6. बौद्धकालीन शिक्षा-प्रणाली में बालक के द्वारा शिक्षा प्रारम्भ किये जाने पर कौन-सा संस्कार किया जाता था -

(A) उपसम्पदा संस्कार

(B) यज्ञोपवीत संस्कार

(C) प्रवज्या संस्कार

(D) उपर्युक्त सभी संस्कार

Dr. Mukesh Pancholi

7. बौद्धकालीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत बालक द्वारा 'बुद्ध शरणं गच्छामी, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि', मन्त्र का उच्चरण कब किया जाता था-

(A) शिक्षा प्रारम्भ करने के समय

(B) शिक्षा पूर्ण करने के समय

(C) युवा होने पर

(D) प्रतिवर्ष

Dr. Mukesh Pancholi

8. बौद्धकालीन शिक्षा-प्रणाली के अन्तर्गत किन व्यक्तियों को शिक्षा से वंचित रखा गया था -

(A) ब्राह्मण को

(B) क्षत्रियों को

(C) कोढ़, तपेदिक तथा नपुंसकता के शिकार व्यक्तियों को

(D) हिंसा के समर्थकों को

Dr. Mukesh Pancholi

9. बौद्धकालीन शिक्षा के मुख्य केन्द्र थे -

(A) सारनाथ

(B) बौद्धगण

(C) नालन्दा एवं तक्षशिला

(D) दिल्ली

Dr. Mukesh Pancholi

10. समावर्तन संस्कार किस आयु में किया जाता था -

(A) 15 वर्ष की आयु में

(B) 20 वर्ष की आयु में

(C) 25 वर्ष की आयु में

(D) 30 वर्ष की आयु में

Dr. Mukesh Pancholi